'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue - 266 (F): Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
May- 2021

राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की गज़लों में जल-पर्यावरण चेतना

प्रा.रवीन्द्र पुंजाराम ठाकरे
शोधछात्र

प्रो.डॉ. अनीता नेरे
शोध निर्देशक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग ,
श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय, मालेगाँव कैम्प,जिला-नासिक (महाराष्ट्र)
ई मेल:-
दूरभाष :- 9822916518

भूमिका :-

प्रकृति और मानव का संबंध अन्योन्याश्रित है। प्रकृति के बगैर मानव के अस्तित्व के कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रकृति या पर्यावरण का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव है। पर्यावरण में मानव को कई अनमोल उपहार दिए हैं। जिन्हें प्राप्त करके मनुष्य ने अपनी उन्नति का रास्ता आसान बनाया है। विकास की लालसा में मनुष्य ने प्रकृति का बेखौफ दोहन किया है।प्रकृति ने मनुष्य को शुद्ध हवा दी, शीतल और स्वच्छ जल दिया , तेज चिलचिलाती धूप से बचने के लिए छायादार पेड़ दिए। परंतु मनुष्य अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति से बाज नहीं आया। यांत्रिक जीवन की चमक-दमक में आकर मनुष्य ने कल-कारखानों का निर्माण किया। मोटारकारों पर सवार होकर मनुष्य मिलों की दूरी घंटों में तय करने लगा। परिणामतः मोटरों और कारखानों से निकलने वाले धुएं ने शुद्ध हवा को प्रदूषित कर दिया। अलग-अलग रसायनों से मिश्रित नालों का जल जब नदी झरनों में सम्मिलित हुआ तब जल का प्रदूषण बढ़ गया। खेती ,कारखानों,बड़ी-बड़ी कंपनियों को बसाने के लिए हरे भरे पेड़ों को काटकर वीरान किया गया। जिसके परिणाम स्वरूप पर्यावरण में ग्लोबल वार्मिंग ,भयंकर अकाल जैसी वैश्विक समस्याएं निर्माण हो गई है। जिसके कारण मनुष्य ही नहीं अपितु सारी जीव सृष्टि का अस्तित्व खतरे में आ गया है।

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक संस्थाएं सरकार तथा समाजसेवी काम कर रहे हैं। पर्यावरण का संरक्षण सब का उत्तरदायित्व हो गया है।पर्यावरण का संतुलन अगर बिगड़ा तो आने वाले दिनों में धरती पर मानव समाज ही नहीं अपितु समस्त जीव सृष्टि के लिए खतरा निर्माण हो सकता है।
अतः मानव समाज को खतरे से आगाह करने के लिए हिंदी साहित्य की ग़ज़ल विधा का विशेष योगदान रहा है। शे'रों के माध्यम से ग़ज़लकार सोए हुए समाज में चेतना भरने का कार्य कर रहे हैं। ऐसे ग़ज़लकारों में सामाजिक, राजनीतिक, दार्शनिक, पारिवारिक, आर्थिक और पर्यावरण चेतना को बखूबी चित्रित किया गया है।

हिंदी ग़ज़ल विधा का स्वरूप और विकास :-

ग़ज़ल हिंदी की अत्यंत प्रभावी विधा है। 'गागर में सागर' भरने की क्षमता ग़ज़ल में है। तथा भावाभिव्यक्ति के लिए ग़ज़ल महत्वपूर्ण मानी जाती है। कवि कम शब्दों में अपने शे'रों के माध्यम से समाज में चेतना निर्माण करता है। इसलिए वर्तमान समय में ग़ज़ल सबसे लोकप्रिय विधा बन गई है।

ग़ज़ल का इतिहास काफी पुराना है। ग़ज़ल उर्दू की देन है। परंतु हिंदी ग़ज़ल में आज अपना अस्तित्व और लोकप्रियता स्वयं निर्माण की है। हिंदी साहित्य में ग़ज़ल लिखने की परंपरा बहुत प्राचीन है। अमीर खुसरो ने हिंदी ग़ज़ल का सूत्रपात किया। बाद में संत कबीर ,भारतेंदु हरिश्चंद्र से होकर दुष्यंत कुमार तक ग़ज़ल का विकास होता रहा।दुष्यंत कुमार ने पहली बार ग़ज़ल को आम जन की पीड़ा के साथ जोड़ा और हिंदी ग़ज़ल की लोकप्रियता को व्यापक बनाया। वास्तव में दुष्यंत कुमार ने हिंदी ग़ज़ल को गरिमा दी और इसके बाद समकालीन ग़ज़लकारों ने इसकी वृद्धि की है। इनमें गोपालदास सक्सेना 'नीरज' ,शमशेर बहादुर सिंह, देवेंद्र

Scanned with CamScanner

शर्मा 'इंद्र' ,बेकल उत्साही , मुनव्वर राणा , निदा फ़ाज़ली , चंद्रसेन विराट , हरीश निगम , ओम प्रकाश चतुर्वेदी 'पराग' , कमलेश भट्ट 'कमल' , कुंवर बेचैन , विज्ञान व्रत , राम मेश्राम , शेरजंग गर्ग , डॉ. गौरी शंकर और राष्ट्रकवि डॉ .बृजेश सिंह प्रमुख हैं ।

राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की ग़ज़लों में जल-पर्यावरण चेतना :-

राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह वर्तमान हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर हैं । इन्होंने 10,000 शे'रों की 'समाधान' शीर्षक से प्रबंध ग़ज़ल का निर्माण किया है । इस ऐतिहासिक रचना में संकलित 1,000 से भी अधिक शे'रों में जल के महत्व, जल के संरक्षण एवं जल के दुरुपयोग को दर्शाया गया है । इन 1000 शे'रों को विभाजित करके चुनिंदा 570 शे'रों का एक संग्रह 'जल-पर्यावरण -समाधान' शीर्षक से शशिभूषण तिवारी ने सन 2014 में प्रभाश्री विश्व भारती प्रकाशन इलाहाबाद से संपादन किया । यह संग्रह जल-पर्यावरण चेतना का इस्पाती दस्तावेज़ है ।

कवि डॉ.बृजेश सिंह ने प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह में जल की निर्मिति से लेकर जल के उपयोग और मानव द्वारा जल की बर्बादी को मार्मिक शब्दों में बयान किया है । जल ही जीवन है । जल के बिना जीव सृष्टि का बचना नामुमकिन है।जल संकट वर्तमान समय की विश्व स्तरीय समस्या है । संभवतः अगला विश्व युद्ध पानी के लिए लड़ा जा सकता है अगर आज मनुष्य ने जल का संरक्षण नहीं किया, उसे संभालकर उपयोग में नहीं लाया तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जल नहीं बचेगा। श्री शशि भूषण तिवारी ने इस ग्रंथ भूमिका में निर्दिष्ट किया है, "जल प्रकृति का अनूठा उपहार है । इसकी महत्ता को समझना बेहद जरूरी है । जल एक आम रासायनिक पदार्थ है,जोकि जीवन के सभी ज्ञात रूपों के अस्तित्व के लिए आवश्यक है ।राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह ने जल के महत्व को समझाने के लिए जल की वैज्ञानिक संरचना से लेकर जल की आध्यात्मिक महत्व तक का आख्यान अपनी ग़ज़लों में प्रस्तुत किया है" । [1]

ग़ज़लकार डॉ .बृजेश सिंह ने जल की महत्ता को स्पष्ट करते हुए जल को प्रकृति की अनमोल सौगात माना है । प्रकृति के इस अनमोल तोहफे को अगर हमने सुरक्षित नहीं किया, जल की अगर बेहिसाब बर्बादी की तो आने वाली नस्लें हमें और दूरदर्शिता के लिए कोसेंगी । कवि लिखते हैं

" पृथ्वी ने दिया हमें सौ बातों का खजाना है,
आदमी की हरकतें फक्त एहसान हो झूठ लाना है ।
पृथ्वी प्रदत्त उपहारों में आकंठ डूबे हैं हम,
पर कुछ न कुछ तो धरती का कर्ज लौट आना है ।
धरती को जल कुछ वापस दे सके अगर तो,
यह कृतघ्नता का बोझ कुछ सर से हटाना है ।
पीढ़ियाँ अदूरदर्शिता के लिए कोसेंगी,
संभल जाए अन्यथा भविष्य में पछताना है।
धरा को जल्द वापस करें,अगर खुद को
आगामी पीढ़ियों की नजरों में ना गिराना है । " 2

जल प्रकृति में नवसंजीवनी भरने वाला मुख्य तत्व है ।अतः प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण खजाना है । प्राचीन काल से ऋषि , मुनि ,संतो , महात्माओं और वैज्ञानिकों ने समय-समय पर जल की महत्ता को रेखांकित किया है । जल सृष्टि के विकास का आधार है। आज वह समय आ गया है कि महापुरुषों, संतो और वैज्ञानिकों के विचारों को आत्मसात करके ही हमें ...

Scanned with CamScanner

संरक्षण को जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाना होगा । तब ही मनुष्य जीवन में सुख - शांति और समृद्धि प्राप्त होगी कवि डॉ. बृजेश सिंह इस संदर्भ में लिखते हैं,-

"जल व पर्यावरण को खत्म करने की साजिश,
आदमी के वजूद को मानू मिटाना है ।
जल के सानिध्य में पलती रही है सभ्यताएं,
पानी को पीना पानी से ही नहाना है ।
जल से ही होता श्राद्ध, जल से ही आचमन,
जल के बिना ना धर्म कर्मकांड हो पाना है।
वेद शास्त्र सब जोर देकर कहते 'बृजेश',
जल से ही आई दुनिया ,जल में ही समाना है"। [3]

जल हमारी दैनंदिन जिंदगी का अविभाज्य हिस्सा है । खाने-पीने, पकाने पचाने से लेकर सारे धार्मिक विधि श्राद्ध और कर्मकांड जल के बिना असंभव है। अतः सभी दृष्टियों से मानव जीवन में जल का असाधारण महत्व है। डॉ. डी. एस. ठाकुर जल की महत्ता को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं,- "भारतीय सभ्यता नदियों से संपूर्ण है । इसलिए भारतीय संस्कृति के प्रत्येक सोपान नदियों से अथवा प्रकारांतर से कहें तो जल से संबद्ध है । सिंधु घाटी, गंगा घाटी , नर्मदा घाटी , बेलन घाटी आदि सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे ही हुआ हैं । इससे मनुष्य का जल से सहजात संबंध प्रमाणित होता है ।भारत में नदियों की महत्ता सर्वोपरि है ।गंगा को नदी नहीं अमृत जल प्रवाहिनी सुरसरि कहा जाता है ।यमुना कृष्ण प्रिया है । नर्मदा को संस्कृति स्रोतस्विनी कह कर पुराणकार ने अपनी श्रद्धा का निवेदन किया है ।" [4]

राष्ट्रकवि बृजेश सिंह भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पुजारी हैं। जीवनदायिनी नदियों की गोद में पलती सभ्यताओं की याद दिलाते हुए वे मानव को कुबुद्धि पर सावधान करते हैं -

"हर प्राणी के लिए नदियां जीवनदाई होती ,
शास्त्रों का सरिता को प्रणम्य ठहराना है ।
आदमी सदियों से नदियों को पूजता आया ,
जीवनदायिनी का पल-पल आभार माना है ।
नदी घाटियों में पलती आई सभ्यताएं ,
'बृजेश' मनुष्य से रिश्ता शाश्वत पुराना है ।" [5]

जहां जल है वहां उसका मोल नहीं हो रहा । अनियंत्रित और निष्ठुरता से उसका उपयोग करके जल बर्बाद किया जा रहा है । परंतु मरुभूमि में अगर जाए तो वहां जल की एक एक बूंद का महत्व समझ में आता है। इस संदर्भ में डॉ. इंद्र बहादुर सिंह के विचार बड़े ही मौलिक हैं । वे लिखते हैं –"आज मानव सभ्यता उस बिंदु से आगे निकल चुकी है, जहां से वापस लौटना बेहद कठिन है। परंतु फिर भी हताश होकर बैठना उचित नहीं है। मानव जाति सामूहिक रूप से स्थिति की गंभीरता को समझते हुए धर्म पथ पर चलते हुए वैज्ञानिक चेतावनियों के आधार पर अपनी दिशा का निर्धारण करें । इसी में सबकी भलाई है और मानव का अस्तित्व भी इसी पर निर्भर है। " [6]

कवि बृजेश सिंह ने जहां एक ओर अपनी गजलों में जल का महत्व , जल प्रदूषण के संकट , जल प्रदूषण के कारणों को उद्घाटित किया है , वहीं दूसरी ओर जल प्रदूषण के उपाय एवं संरक्षण की महत्ता को भी चित्रित किया है, वह लिखते हैं -

"नदियों से रिश्ता हमारा सनातन पुराना है ,

Scanned with CamScanner

प्रत्येक तीर्थ में पुण्य का काम नहाना है।
सभी कर्मकांड नदियों के तटों पर होते ,
नदियों को पावन पवित्र शास्त्रों ने माना है।
महानदी कावेरी गोदावरी ब्रह्मपुत्र ,
गंगा नर्मदा को पतित पावनी ठहराना है।
कल कारखानों नाली के गंदे पानी से ,
जीवनदाई नदियों को नरक कुंड बनाना है।
जल स्रोत प्रदूषित करना महापाप बृजेश ,
शपथ लें न खुद को पाप का भागी बनाना है।"[7]

कवि जल की बर्बादी के सख्त विरोधी हैं। पहाड़ -पर्वत ,खेत-खलियान में बारिश का जो पानी आता है उसे हटाकर गड्ढों में एकत्रित करना चाहिए , जिससे भू जल स्तर में वृद्धि हो सकती है।बारिश के दिनों में छत पर गिरने वाले पानी को एक गड्ढे में समाविष्ट करें तो जलापूर्ति की समस्याओं को हल किया जा सकता है। जल साक्षरता के लिए रेनवाटर हार्वेस्टिंग रामबाण उपाय है। कवि की दृष्टि से सरोवर खोदना पुण्य का काम है। इन्हीं सरोवरों के सहारे खेती की सिंचाई होती है ,जिससे स्वादिष्ट फल और स्वस्थ अन्न उपजा जाता है।गाय-भैंसों एवं वन्य प्राणियों को पीने के पानी की समस्याओं से निजात मिलती है।अल्पभूधारक एवं मेहनतकशों को किल्लत भरी जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए जल को हरसंभव बचाना जरूरी है। शादी-ब्याह ,पार्टियां , गृह प्रवेश तथा तीज -त्योहारों में भी जल को बचाना है।जल संरक्षण की पुकार लगाते हुए ग़ज़लकार डॉ.बृजेश सिंह लिखते हैं -

"प्रदूषण के विरुद्ध जमकर आवाज उठाना है,
पत्रकारिता को महती दायित्व निभाना है।
जल संरक्षण को खुलकर देना है समर्थन ,
सरकार संग जन-मन को भी आगे आना है।
पर्यावरण संरक्षण के कई कार्य अव्यवस्थित ,
और व्यवस्था सुधारने का अभियान चलाना है।
पर्यावरण संरक्षण के प्रति सबका ही दायित्व ,
पर्यावरणीय चेतना जन - मन में जगाना है।
पर्यावरण संरक्षण प्राथमिकता देनी 'बृजेश' ,
विकास के पीछे न इसे उपेक्षित बनाना है।"

कवि ने जीवन का रस तत्व जल को ही माना है। सृष्टि से पहले भी जल था और बाद में भी जल रहेगा। किंतु धरती के इस अनमोल रत्न को पानी की तरह बहाने पर कवि के मन में क्षोभ उत्पन्न होता है , जो सर्वथा उचित है।

निष्कर्ष -

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह की ग़ज़लें जल-पर्यावरण चेतना का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। सुप्रसिद्ध जनवादी आलोचक डॉ. विनय कुमार पाठकइस संदर्भ में लिखते हैं –"जल को लेकर आने वाले कल में विश्वव्यापी संकट की चुनौती से हमें रू-ब-रू होना है। डॉ. बृजेश सिंह इसीलिए जल के संरक्षण व संवर्धन के लिए ,चेतना जागृत करने के लिए कई ग़ज़लों